मेरा गाँव मेरा गौरव प्रोग्राम के तहत प्रक्षेत्र दिवस का आयोजन

डॉ. विनोद कुमार, वरिष्ठ वैज्ञानिक (पादप रोग) और उनकी टीम (डॉ. अभय कुमार, वरिष्ठ वैज्ञानिक, कृषि जैव तकनीकी एवं डॉ. जय प्रकाश वर्मा, तकनीकी सहायक) के द्वारा 21 अक्टूबर 2019 को पूर्वी चंपारण के ककन्द्रेश्त गाँव में “समसामयिक कृषि समस्याएं एवं उनका समाधान” विषय पर प्रक्षेत्र दिवस का आयोजन किया गया। कार्यक्रम के शुरूआत में डॉ. विनोद कुमार ने किसानों को खेतों में समसामयिक फसलों की वर्तमान समस्याओं के अलावा, जैविक खेती एवं प्रयोग किये जानेवाले उपादानों के बारे में विस्तृत जानकारी दी। तदुपरान्त, उन्होंने जैविक कीटनाशी बनाने की विधि और इसके प्रयोग, एवं लीची के बागों में सूक्ष्मजीव जैसे ट्राइकोडमाा, माइक्रोराइजा और एजोटोबैक्टर के प्रयोग के बारे में बताया। ये उपाय पारस्परिक इंजीनियरिंग सिद्धांतों का उपयोग करते हैं जो फसल के स्वास्थ्य और उत्पादकता का ख्याल रखने के लिए नायक की जीवाणुओं और शिकारी कीटों को प्रोत्साहित करते हैं। एथनोपेडिसिनल प्लांट्स जैसे नीम (एजोट्रिकटा इंडिका), कैटनीपा या कैटरिमिट (नेपेटा काटरिमिट), करंज (पॉयागामिया फिनिना), गोमा या शंबा (तुकास एसपेरा), आक (कैल्ट्रिपिस प्रोसेरा), धतुरा (धतुरा स्ट्रैमोरियम), लहसुन (एलियम सीपा) के विभिन्न भागों को आसुतअका प्राकृतिक जीवाणु के रूप में उपयोग किया जाता है। किसानों को इससे संबंधित वीडियो फिल्म भी दिखाई गई। डॉ. अभय कुमार ने जैव विविधता की महत्ता के साथ-साथ वैज्ञानिक के लिए किस्में की जानकारी दी। डॉ. जय प्रकाश वर्मा ने लीची की वलयन (गाँविंग) तकनीक एवं ट्रेनिंग और प्रूनिंग की जानकारी दी। इसके बाद प्रक्षेत्र पर व्यवहारिक विधि प्रदर्शन किया गया जिसे किसानों ने खुद से अभ्यास किया।

इसमें प्रमुखता से लीची और आम में ट्राइकोडमाा और एजोटोबैक्टर का प्रयोग; भिंडी-जनित रोग गोंदात्री रोग (गमोसिस) एवं शैवालों के प्रकोप से बचाव हेतु फार्मूलनाशी के प्रयोग; छाल खानेवाले कीट (इंदरबेला स्पीसीज़) का प्रबंधन; नियमित फलन के लिए वलयन तकनीक; ट्रेनिंग और प्रूनिंग तकनीक शिक्षा और इंटरेस्टिंग सत्र में समसामयिक और आगामी फसलों यथा- अदरक, आलू, टमाटर और अन्य सब्जियां, सरसों, रबी दलहन और फलों की फसलों, जैसे लीची और आम की किसानों से साथ चर्चा की गई।
प्रक्षेत्र दिवस पर डॉ. विनोद कुमार, वरिष्ठ वैज्ञानिक किसानों को संबोधित करते हुये डॉ. अभय कुमार, वरिष्ठ वैज्ञानिक किसानों को जैव विविधता एवं लीची के उन्नत प्रभेद के बारे में जानकारी देते हुये
नियमित फलन के लिए व्यवस्थापन तकनीक का क्षेत्र प्रदर्शन करते हुए वैज्ञानिक और तकनीकी सहायक

मिटी-जनित रोग, गोदात्री रोग (गमोसिस) एवं शैलों के प्रकोप से बचाव हेतु फफूाँदनाशी के प्रयोग का विधि प्रदर्शन
ट्राइकोडमा का लीची के बागों में प्रयोग का विधि प्रदर्शन

विधि प्रदर्शन के बाद कुछ प्रगतिशील किसानों के साथ सामूहिक छायाचित्र